ST. PAUL TEACHERS' TRAINING COLLEGE, BIRSINGHPUR

L.N.M.U DARBHANGA

ASSIGNMENT

BACHELOR OF EDUCATION(1st YEAR)

9/10

NAME :- AMISHA BHARTI

ROLL NO :- 93

SESSION :- 2022 - 2024

SUBJECT :- C-07(A). Pedagogy of Social Science.

SUBMITTED TO:

SUBMITTED BY :
Amisha Bharti

Name	Amisha Bharti	Year	
Subject	C-07(a) Pedagogy of Social Science	Class	B.Ed-Iyr
Semester		Roll No.	93

INDEX

Sr. No.	Experiment Description	Experiment Date	Submission Date	Remarks / Signature
1.	सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम में सुधार हेतु NCF -2005 एवं BCF -2008 का वर्णन करें।			
2.	सामाजिक विज्ञान के शिक्षक के गुणों का संक्षेप में विवेचना कीजिए।			

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

प्रश्न:-1 सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम मे सुधार हेतु NCF-2005 एवं BCF-2008 का वर्णन करें।

उत्तर ⇒ प्रस्तावना :-

NCF-2005 का Full form, National Curriculum Framework-2005 है, जिसे हिन्दी में "राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा" के नाम से जानते है। NCF-2005 का मूल आधार भारतीय संविधान है - धर्म निरपेक्ष, समतावादी, बहुलतावादी समाज जो सामाजिक न्याय एवं समानता के प्रमुख मूल्यों पर आधारित है।

इसके अध्यक्ष के रूप मे प्रो० यशपाल को नियुक्त किया गया। NCF-2005 भारत में स्कूलों के लिए पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण प्रथाओं के लिए एक दिशा निर्देश के रूप में कार्य करता है। NCF-2005 ने Learning without Burden और National Policy of education 1986-1992 तथा Focus group discussion पर अपनी नीतियों को आधारित किया है।

सर्वप्रथम किसी भी प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रम को सफल व प्रभावशाली बनाने हेतु सिद्धांतो के आधार पर उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है जिससे पाठ्य-क्रम एवं योजना का निर्धारण किया जा सके।

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना-2005 के प्रमुख उद्देश्यों को

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

निम्नलिखित रूप से सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम में लाया गया है —

1. राष्ट्रीय एकता का विकास :-

भारत प्राचीन काल से ही अनेकता में एकता के लिए प्रसिद्ध रहा है। देश की एकता एवं अखंडता से संबंधित विषय-वस्तु को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना 2005 में अधिक महत्व प्रदान किया है। भारत विभिन्न धर्मों, भाषाओं एवं परंपराओं का देश होने के कारण सामान्य जन-जीवन में प्रतिकूल प्रभाव डालता है। विचारधाराएँ भिन्न हों पर एकता की आवश्यकता है। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना में राष्ट्रीय एकता को सर्वोपरि स्थान दिया गया है।

2. राष्ट्रीय विकास :-

NCF-2005 का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रीय विकास करना है जो केवल शिक्षा द्वारा संभव है।

3. मानवीय मूल्यों का विकास :-

भारतीय दर्शन एवं शिक्षा मानवता एवं नैतिकता को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है। NCF-2005 का मुख्य उद्देश्य प्रारंभिक स्तरों से ही मानवीय मूल्यों

PRINCIPAL
... Teachers' Training College
Bibhutipur
...pur, Samastipur

का विकास करना है। जिससे कि छात्रों में प्रेम, सहयोग, परोपकार, क्षमा एवं सहिष्णुता जैसे - मानवीय गुणों का विकास किया जा सके।

4. भाषायी समस्याओं का समाधान :-

भारतीय समाज मे विभिन्न प्रान्तों में भाषा का स्वरूप भिन्न - भिन्न पाया जाता है। इससे राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना में भाषा की समस्या हमेशा से रही है कि किस भाषा को राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्वीकार किया जाए। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना - 2005 में विभिन्न भाषाओं एवं मातृभाषा को उचित स्थान प्रदान कर भाषायी समस्या का समाधान किया है।

5. छात्रों का सर्वांगीण विकास :-

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना का प्रमुख उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास करना है और छात्रों को क्रियात्मक एवं सैद्धांतिक पक्ष दोनों तरीकों से सुदृढ़ बनाया जाता है।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Satrastipur

6. शिक्षकों में आत्मविश्वास का [illegible] करना :-

पाठ्यक्रम को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित किए जाने के लिए शिक्षकों में आत्मविश्वास का विकास करना राष्ट्रीय पाठ्यक्रम संरचना

का उद्देश्य है। आत्मविश्वासपूर्ण शिक्षण कार्य निरन्तर प्रगति पर चलता है।

7. शिक्षण साधनों में समन्वय स्थापित करना :-

NCF-2005 का उद्देश्य शिक्षण कार्य के मानवीय एवं भौतिक साधनों में समन्वय स्थापित करना है।

BCF - Bihar Curriculum Framework - 2008

BCF-2008 का पूरा नाम बिहार पाठ्यक्रम संरचना - 2008 है जिसे बिहार की पाठ्यक्रम की रूपरेखा 2008 के नाम से जानते है। ये बिहार द्वारा स्वयं के राज्य शिक्षा पाठ्यक्रम में अलग और अपने अनुसार चलाने के लिए किया गया सोच है। इसमें उन्होंने शिक्षा में कुछ बदलाव करते हुए अपने बिहार राज्य का अलग पाठ्यक्रम बनाया है जिसे BCF-2008 के नाम से जाना जाता है।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Mohiuddinnagar, Samastipur

सामाजिक विज्ञान में सुधार के मुख्य उद्देश्य निम्न है -

BCF-2008 को बिहार सरकार के द्वारा बिहार राज्य के शिक्षा पाठ्यक्रम को अपने अनुसार चलाने के लिए तैयार किया गया है। इसमें भी कई क्षेत्रों में सुधार किया गया जिसमें से एक सामाजिक विज्ञान है।

सामाजिक विज्ञान में सुच्चार के लिए NCF - 2005 तथा BCF - 2008 दोनों का उद्देश्य लगभग बराबर ही है परन्तु दोनों के स्तरों में काफी अंतर है। NCF - 2005 राष्ट्रीय स्तर पर पूरे देश के संदर्भ में पाठ्यक्रम में जोड़ा गया जो कि शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में सुच्चार के लिए कटिबद्ध है लेकिन BCF - 2008 बिहार के संदर्भ में राज्य स्तर पर पाठ्यक्रम बनाया गया है।

सामाजिक सुच्चार व सामाजिक विज्ञान के सुच्चार के लिए निम्न उद्देश्य हैं —

1. राज्य एकता का विकास
2. राज्य का विकास
3. मानवीय मूल्यों का विकास
1. छात्रों का सर्वांगीण विकास
5. भाषायी समस्या का समाधान
6. शिक्षकों के आत्मविश्वास का विकास
7. सामाजिक एकता का विकास
8. शिक्षण साधनों में समन्वय स्थापित करना

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhehuri, Samastipur

निष्कर्ष (Conclusion) :-

इस प्रकार से NCF-2005 तथा BCF-2008 का सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम में सुधार के लिए दोनों का अपना-अपना सिद्धांत व उद्देश्य है जिसमें NCF-2005 का उद्देश्य व सिद्धांत राष्ट्रीय स्तरों पर पाठ्यक्रम में सुधार की बात की जा रही है। NCF-2005 ने उन सभी सिद्धांतों एवं उद्देश्यों पर ध्यान दिया है जिसमें सामाजिक विज्ञान में छात्रों का सर्वांगीण विकास हो। जबकि BCF-2008 में राज्य स्तरीय अर्थात् पूरे बिहार के सन्दर्भ में पाठ्यक्रम का सुधार है।

इस प्रकार NCF-2005 लगभग समूह का निर्माण किया जिसमें एक सामाजिक विज्ञान सुधार की बात है। उसी प्रकार BCF-2008 सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम में सुधार की अपनी-अपनी भूमिका निभाई है।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

ST.PAUL TEACHERS' TRAINING COLLEGE

BIRSINGHPUR, SAMASTIPUR (BIHAR)

A CONSTITUENT UNIT OF L.N.M.U. DARBHANGA

BACHELOR OF EDUCATION

SESSION- 2021-23

ASSIGNMENT

COURSE: - 7B (MATH PEDAGOGY)

NAME	:-	NEHA BHARTI
CLASS	:-	B. ED (SECOND YEAR)
ROLL NO.	:-	95
SECTION	:-	'B'

9/10

....Neha Bharti.....

Signature of Lecturer *Signature of Student*

Name ..... NEHA BHARTI ..... Year ..... 2021-23 .....

Subject ..... C-7(b) ..... Class ..... B.Ed. 2nd year .....

Semester ..... Roll No. ..... 95(B) .....

INDEX

S. No.	Experiment Description	Experiment Date Page	Submission Date	Remark/Sign.
1.	गणित शिक्षण के लक्ष्य क्या - क्या है ?	1-6		
2.	गणित के पाठ्यक्रम का वर्णन करें।	7-12		

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhakuri, Samastipur

COURSE - 7(b)

PEDAGOGY OF MATHEMATICS

1. गणित - शिक्षण के लक्ष्य क्या - क्या हैं?

→ • **प्रस्तावना :-**

ध्येयों एवं मूल्यों की दिशाओं में बढ़ने के लिए लक्ष्य अपेक्षाकृत कम समान्यीकृत कथन हैं। लक्ष्य विषय विशेष तथा गणित शिक्षा के प्रयोजनों को प्रस्तुत करने वाले सामान्य कथन हैं। ये गणित शिक्षा के द्वारा समग्र शिक्षा के ध्येयों और मूल्यों की अनुभूति में योगदान करते हैं। सामान्य शिक्षा तथा विशिष्ट शिक्षा दोनों में गणित शिक्षण के लक्ष्य समान हैं।

• **गणित शिक्षण के मुख्य लक्ष्य :-**

1.) गणित शिक्षण में बच्चों के सीखने के आनंद पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि NCF-2005 कहता है कि गणित को इस तरह से पढ़ाना चाहिए कि बच्चे डरने के बजाय गणित का आनंद लेकर सीखें।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers Training College
Birsinghpur
Mahuri, Samastipur

P.T.O.

2.) NCF - 2005 के अनुसार स्कूल में गणित की शिक्षा का मुख्य लक्ष्य बच्चे के विचार प्रक्रिया का गणितीयकरण है।

3.) गणितीय संक्रियाओं को पर्यावरण से संबंधित व्यावहारिक गतिविधियों के संदर्भ में पढ़ाया जाना चाहिए ताकि शिक्षार्थी दैनिक जीवन में गणित के योगदान को समझ सके।

4.) स्कूल में गणित वह डोमेन है जो औपचारिक रूप से समस्या समाधान को एक कौशल के रूप में संबोधित करता है। समस्याओं को प्रस्तुत करना और हल करना बच्चों में रचनात्मकता की क्षमता विकास करने के अलावा सीखने के स्तर एवं गुणवत्ता को दर्शाता है।

5) गणित शिक्षण, बच्चों की बुनियादी क्षमता को विकसित करने में गणितीय प्रयोग तथा उनके विचारों में गणितीयकरण लाने पर केन्द्रित होना चाहिए।

• **समान्य शिक्षा में गणित के लक्ष्य :—**

समान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम ध्येयों तथा लक्ष्यों (विस्तृत) पर पाठ्यक्रम के अंतर्गत चर्चा हुई। यहाँ [illegible] संदर्भ

P.T.O.

PRINCIPAL
St. Paul Teachers Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

Page: 3

में गणित के संगत लक्ष्यों को निम्नांकित रूप से सूत्रबद्ध किया जा रहा है :-

(i) समस्याओं और संरचनाओं की व्यवहारिकता के लिए आधारिक बोधों और कौशलों में सामर्थ्य स्थापित करना।

(ii) प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति और लेखाचित्रों के द्वारा विचारों का सम्प्रेषण गणित शिक्षण का लक्ष्य है।

(iii) मूल्यों के विभेद से संगत निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना।

(iv) संगत एवं असंगत डाटा में पहचान की क्षमता का विकास करना।

(v) भौतिक एवं सामाजिक संरचना से संबंधित और गणित के महत्व की अनुभूति द्वारा सांस्कृतिक उन्नति का विकास करना।

(vi) बौद्धिक स्वतंत्रता का विकास करना।

शिक्षा प्रक्रम के प्रत्येक स्तर पर इन लक्ष्यों की पृष्ठभूमि में गणित की विषय - वस्तु को संगत रूप प्रदान

PRINCIPAL
St. Paul Teachers Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

P.T.O

कर प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए उपयोगी बनाया जा सकता है।

- **राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में गणित - शिक्षण के लक्ष्य :-**

NEP - 1986 के क्रियान्वयन हेतु NCERT ने प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए NCF प्रस्तुत किया। इसमें शैक्षिक सोपान के विभिन्न स्तरों के लिए गणित शिक्षा के लक्ष्य प्रस्तुत किए गए हैं। पूर्व - प्राथमिक स्तर पर इन्हें निम्नलिखित प्रकार से देखा जा सकता है :-

- **पूर्व - प्राथमिक स्तर :-**

संख्या - खेलों के द्वारा गणित में बाल - अभिरुचि विकसित करने के लिए, बालबोध विकसित करने के लिए अनौपचारिक प्रयास करना। खेल - खेल में ही अंकों एवं आकारों के माध्यम से बच्चों में जिज्ञासा उत्पन्न करने का प्रयास करना।

- **निम्न - प्राथमिक स्तर :-**

इस स्तर पर बच्चों को संख्याओं, तथ्यों, ज्यामितीय वस्तुओं द्वारा

P.T.O.

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur, Jhahuri, Samastipur

समय तथा लम्बाई और धारिता की मापों से संबंधित आधारभूत शब्दावली और प्रतीकीकरण में पारंगति प्राप्त करनी चाहिए साथ ही वह इसका अपने तत्कालिक पर्यावरण की दैनिक समस्याओं को प्रयुक्त करने में सक्षम होना चाहिए

• उच्च - प्राथमिक स्तर :-

इस स्तर पर शिक्षार्थी को वाणिज्य के गणित, क्षेत्रमाप, विस्तारात्मक, सांख्यिकी, व्यावहारिक, ज्यामितीय और प्रारंभिक बीजगणित के मूल तत्वों से संबंधित अवधारणाओं तथ्यों, सिद्धांतों आदि के आगे के अभिज्ञान बोध को अर्जित करना चाहिए। उसको चित्रांक प्रतिरूप बनाने और मापन के कौशलों तथा सांख्यिकी लेखाचित्र से दत्त को पढ़ने एवं उसके निर्वचन की योग्यता विकसित करनी चाहिए, उसको दत्त को पढ़ने एवं समस्याओं को हल करने में सारणियों तथा संगणकों के उपयोग की प्रवीणता भी विकसित करनी चाहिए।

• माध्यमिक - स्तर :-

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Samastipur

इस स्तर पर शिक्षार्थी को बीजगणित, ज्यामिति, प्रारंभिक, त्रिकोणमिति और

P.T.O.

सांख्यिकी के संबंधित अवधारणाओं, प्रतीकों और प्रतिक्रियाओं का अभिधान और बोध अर्जित करना चाहिए। उसे बीजगणितीय विधी से समस्याओं को हल करने की योग्यता विकसित करनी चाहिए।

• निष्कर्ष :-
(conclusion)

उपर्युक्त वर्णित गणित के लक्ष्य संबंधित कथनों एवं विवेचनाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि बच्चों में तार्किक, प्रयोगात्मक, रचनात्मक, एवं समस्या समाधान करने की क्षमता का विकास करना ही गणित शिक्षण का मुख्य लक्ष्य है।

————*

5

St. Paul Teachers Training College
Birsinghpur
Shahuri, Samastipur

St. PAUL TEACHERS TRAINING COLLEGE

BIRSINGHPUR SAMASTIPUR

(A Constituent Unit of L.N.M.U.Darbhanga)

Bachelor of Education

Session - 2021-2023

ASSIGNMENT

Name	:-	Namrata Neha
Class Roll No	:-	33
Section	:-	A
University Roll No	:-	2241203.
Subject	:-	C-7B(Economics).

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

Submitted by Namrata Neha

Submitted to

Date of receiving Assignment.....

Course- C7B

Economics

Q.1. विद्यालय पाठ्यक्रम में अर्थशास्त्र का स्थान एवं महत्व का वर्णन करें।

उत्तर- प्रस्तावना :-

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो. मार्शल ने अर्थशास्त्र के महत्व का दो क्षेत्रों में वर्णन किया है। प्रो. मार्शल अर्थशास्त्र का सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक दोनों ही दृष्टिकोणों से महत्व बतलाते है। प्रो. मार्शल के शब्दों में "अर्थशास्त्र के अध्ययन का उद्देश्य प्रथम तो केवल ज्ञान के लिए ज्ञान का प्राप्त करना है और द्वितीय व्यावहारिक जीवन, विशेषतया सामाजिक जीवन में मार्ग प्रदर्शन करना है।"

सामाजिक अध्ययन के शिक्षण में अर्थशास्त्र की आवश्यकता को अर्थशास्त्र के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक महत्व के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है। वर्तमान समय में समाज का प्रत्येक व्यक्ति अधिकतम सुखोपभोग के साधनों को प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है। उनके लिए आर्थिक गतिविधियों एवं क्रियाओं का महत्व बढ़ गया है। अर्थशास्त्र मनुष्य की अर्थ आधारित क्रियाओं से संबंधित समस्याओं का सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक दोनों रूपों में समाधान प्रस्तुत करता है। समय की मांग के अनुसार अर्थशास्त्र की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। विभिन्न क्षेत्रों में इसके नवीन ज्ञान का विकास हो रहा है। जिसके कारण इसको आर्थिक विश्लेषण के नाम से जाना जाता है।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

- अर्थशास्त्र की परिभाषा :-

अर्थशास्त्र की परिभाषा विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने अपने-अपने शब्दों में दिए है, जिसमें से कुछ इस प्रकार है :-

- वॉकर के अनुसार :-
" अर्थशास्त्र ज्ञान का वह संग्रह है, जो धन से संबंधित है।"

- प्रो॰ मार्शल के अनुसार :-
" धन मनुष्य के लीए है ना की मनुष्य धन के लीए। उनके अनुसार धन साध्य नहीं है, वरन् साधन मात्र है।"

- रॉबिन्स के अनुसार :-
" अर्थशास्त्र वह विज्ञान है, जो लक्ष्यों एवं उनके सीमित तथा वैकल्पिक उपयोगों वाले साधनों के परस्पर संबंधों के रूप में मानव व्यवहार का अध्ययन करता है।"

- प्रो॰ जे॰के॰ मेहता के अनुसार :-
" अर्थशास्त्र वह विज्ञान है, जो मानवीय आचरण का इच्छा रहित अवस्था में पहुँचने के एक साधन के रूप में अध्ययन करता है।"

* विद्यालय में पाठ्यक्रम में अर्थशास्त्र का स्थान :-

आजादी के पश्चात् कोठारी आयोग या शिक्षा आयोग ने शिक्षा की स्थिति, उसकी समस्याओं तथा आवश्यकताओं पर समग्र रूप से विचारोप्रांत लोकतांत्रिक तथा नागरिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ती के लीए छात्रों में जीवन उपयोगी कौशलों तथा अभिवृत्तियों को विकसित करना आवश्यक बतलाया। शिक्षा आयोग के शब्दों, " शिक्षा एक तिहरी प्रक्रिया है जो ज्ञान देती है

PRINCIPAL St. Paul Teachers Training College

"योग्यता का विकास करती है और उचित रुची अभीवृत्ति तथा मुल्य संबंधी भावना जाग्रत करती है।" आज अधिकतर विद्यालय महाविद्यालय और विश्वविद्यालय ज्ञान प्रदान करने तक ही अपने को सीमित रखते है और यह कार्य भी संतोषजनक रूप से नहीं करते। पाठ्यक्रम में किताबी ज्ञान और रटने पर अधिक बल दिया जाता है क्रिया आधारित अनुभव की पर्याप्त व्यवस्था नहीं की जाती है। इसके अलावा उपयोगी कौशलों के विकास उचित रुचि, अभीवृत्ति तथा मूल्य संबधि भावना जाग्रत नहीं करती है, जिसके कारण पाठ्यक्रम ना केवल आधुनिक ज्ञान से दूर हो जाता है, अपितु लोगों के जीवन से उसका संबंध भी कट जाता है।" अतः आवश्यकता इस बात की है कि पाठ्यक्रम को जीवन की आवश्यकता के अनुकूल बनाया जाए। ज्ञान के विस्फोटक ने पाठ्यक्रम में सुधार लाने की आवश्यकता पर बल दिया है। स्थिति का आकलन करते हुए शिक्षा आयोग ने अर्थशास्त्र को महत्वपुर्ण एवं उपयोगी विषय बताते हुए इसे विद्यालयों में अवश्य ही स्थान दिए जाने की सिफारिश करते हुए विद्यालय पाठ्यक्रम में माध्यमिक स्तर एवं उच्च माध्यमिक स्तर के पाठ्यक्रम में वैकल्पिक विषय के रूप में स्थान प्रदान किया है।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College

- अर्थशास्त्र का विद्यालय पाठ्यक्रम में महत्व :-

- किसी भी विषय का महत्व उसके लिए पाठ्यक्रम में प्रदान किए गए समय, उद्देश्य तथा प्राथमिकताओं के आधार पर होता है। यह विचारकों के अनुसार परिवर्तित हो सकता है क्योंकि विषय शिक्षण के सामान्य

उद्देश्य समय - समय पर बदलते रहते है। वर्तमान परिस्थिती यों में अर्थशास्त्र शिक्षण का बहुत महत्व है।

J.H. Dodd के अनुसार अर्थशास्त्र शिक्षण के निम्नलिखित महत्व बताए गए है।

1. अर्थशास्त्र व्यवसाय के चयन में सहायता प्रदान करता है।

2. यह व्यक्ति को धन का सदुपयोग करना सीखाता है।

3. उद्योग एवं व्यवसाय के संगठन में सहायता प्रदान करता है।

4. ~~स~~ औद्यौगीक सभ्यता को समझने में सहायता प्रदान करता है।

5. यह व्यक्तिगत तथा ~~दृश~~ पारिवारिक वित्तिय मागलों ~~एवं~~ की व्यवस्था करना सीखाता है।

अर्थशास्त्र शिक्षण के महत्व को दो भागों में विभाजीत किया गया है।

(a) सैद्धान्तिक महत्व

(b) व्यवहारिक महत्व :—

St. Paul Teachers' Training College
Bisingpur
Jhakuri, Samastipur

(ख) १. सैद्धान्तिक महत्व :-

1. सैद्धान्तिक ज्ञानवर्धन :-

अर्थशास्त्र शिक्षण छात्रों को आर्थिक पदों, नियमों, तथा अवधारणाओं का ज्ञान प्राप्त होता है। इसके ज्ञान से यह जानने में समर्थ होता है कि हमारे देश में किस प्रकार की आर्थिक व्यवस्था है। अर्थशास्त्र के अध्ययन से छात्र आर्थिक नियोजन, बेरोजगारी, जनाधिक्य, निम्न उत्पादनशीलता आदि को समझने तथा उनके प्रभाव को जानने में समर्थ होता है।

2. मानसिक शक्तियों का विकास :-

अर्थशास्त्र विज्ञान की भी माना जाता है, यद्यपि इसमें प्राकृतिक विज्ञानों की भांति सिद्धांतों का प्रतिपादन प्रयोगशाला में किए गए अवलोकन एवं परीक्षण द्वारा नहीं की जाती है। अर्थशास्त्र की प्रयोगशाला समाज और विषय सामाग्री मानव है जिसकी इच्छाओं आचरण, विचारों आदि में सदैव परिवर्तन होते रहता है। अर्थशास्त्र के अध्ययन में छात्रों को विभिन्न समस्याओं के विभिन्न पक्षों पर भी विचार करना पड़ता है, जिससे उनकी विवेक, शक्तियों का विकास होता है तथा उन्हें अपने निर्णय शक्ति का प्रयोग करने का अवसर मिलता है।

3. व्यापक दृष्टिकोण :-

अर्थशास्त्र के अध्ययन का मुख्य विषय धन है। इसके अध्ययन से छात्रों मानव कल्याण के लिए धन से संबंधित व्यवहारिक समस्याओं का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समाधान करना सीख जाते हैं, इस प्रकार उनके व्यापक दृष्टिकोण का विकास होता है।

- व्यवहारिक महत्व :-

प्रोफेसर पीगु ने अर्थशास्त्र के व्यवहारिक महत्व पर बल देते हुए कहा है कि इससे केवल ज्ञान ही प्राप्त नहीं होता है बल्कि यह आचार और विचार को सुधारने वाला है। अर्थशास्त्र शिक्षण के व्यावहारिक महत्व को दो भागों में विभक्त किया गया है। :-

- व्यक्तिगत महत्व
- सामाजीक महत्व

- व्यक्तिगत महत्व :-

अर्थशास्त्र के अध्ययन से होने व्यक्ति को अनेक प्रकार की व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होते हैं जिससे उनको व्यक्तिगत जीवन में समस्याओं को समाधान में सहायता प्राप्त होती है और वे लाभ प्राप्त करते हैं-

- सामाजिक महत्व :-

अर्थशास्त्र एक सामाजीक विज्ञान है। इसमें व्यक्ति क्रियाओं का सामूहिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाता है। इसके द्वारा सामाजिक समस्याओं के समाधान में सहायता प्राप्त होती है।

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर कहा जा सकता है कि अर्थशास्त्र का हमारे व्यक्तिगत, राष्ट्रीय, एवं सामाजिक जीवन में बहुत महत्व है। अतः अर्थशास्त्र के शिक्षण ध्येय व्यक्तिक एवं सामाजीक जीवन को सुविकसित करना है।

2. विद्यालय के विभिन्न स्तरों पर अर्थशास्त्र की विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण कीजिए ।

उत्तर- अर्थशास्त्र के तथ्यों के संकलन एवं संगठन के पश्चात् यह प्रश्न उठता है कि इस पाठ्यवस्तु को किस ढंग से प्रस्तुत किया जाए क्योंकी प्रस्तुतीकरण शिक्षण - प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है। कक्षा शिक्षण में पाठ्यवस्तु का प्रस्तुतीकरण करते समय निम्नलिखित सामान्य सिद्धान्तों को ध्यान में रखना चाहिए —

1. अर्थशास्त्र का जो भी तथ्य छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जाये, वह सुनिश्चित एवं बोधगम्य होना चाहिए।

2. अर्थशास्त्र की पाठ्यवस्तु को प्रस्तुत करते समय शिक्षक को सदैव बालकों की आयु उनके मानसिक स्तर, विकास-आवश्यकताओं उनकी सामर्थ्यों तथा रुचियों का ध्यान रखना चाहिए। यदि अध्यापक इनका ध्यान नहीं रखेगा तो वह सफलता के साथ विषयवस्तु को प्रस्तुत नहीं कर सकता। अर्थशास्त्र के प्रस्तुतीकरण में मानसिक योग्यता का सिद्धान्त इसलिए भी आवश्यक है, क्योंकि छात्रों को जीवन के प्रारंभिक काल में जीवन की आर्थिक विषमताओं का कोई ज्ञान नहीं होता और न उनमें आर्थिक उत्तरदायित्वों को संभालने की क्षमता होती है। इसलिए अर्थशास्त्र का प्रस्तुतीकरण उनकी योग्यता, रुचियों तथा आवश्यकताओं के अनुरूप ही होना चाहिए।

3. अर्थशास्त्रों के जीन नियमों एवं सिद्धान्तों को प्रस्तुत किया जाये, उनकी व्यावहारिकता पर अधिक बल देना चाहिए इसके अभाव में इसका कोई मूल्य नहीं होता।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers Training College
Birsinghpur
Shahuri, Samastipur

classmate
Page: 2.8

4. उसकी पाठ्यवस्तु का प्रस्तुतीकरण समाज की आवश्यकताओं के अनुसार किया जाना चाहिए।

शिक्षा आयोग (1964-66) ने शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए निम्नलिखित संरचना प्रस्तुत की है —

(a) अवर प्राथमीक अवस्था (कक्षा 1 से 3 तक) :-
इस स्तर पर "पर्यावरण का अध्ययन" कक्षा 3 व 4 के लिए निर्धारित किया गया है। इसमें विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन सम्मिलित होंगे।

(b) उच्चतर प्राथमीक अवस्था (कक्षा 5 से 7 तक) :-
इस स्तर पर सामाजिक अध्ययन (इतिहास, भूगोल तथा नागरिकशास्त्र) का निर्धारण किया गया है।

(c) अवर माध्यमीक अवस्था (कक्षा 8 से 10 तक) :-
इस स्तर पर इतिहास, भूगोल तथा नागरिक शास्त्र का निर्धारण किया गया है। इस सामाजिक विज्ञान के पाठ्य-विवरण में अर्थशास्त्र की कुछ विषयवस्तु को स्थान दिया गया है।

(d) उच्चतर माध्यमीक अवस्था (कक्षा 11 से 12 तक) :-
इस स्तर पर अर्थशास्त्र को एक वैकल्पिक स्तर पर रखा गया है।

(e) विश्वविद्यालयी अवस्था (प्रथम डिग्री कोर्स 3 वर्षीय तथा द्वितीय डीग्री कोर्स 2 वर्षीय) :-
इस स्तर पर अर्थशास्त्र का अध्ययन विशेषीकृत रूप से किया जायेगा।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahurpur, Samastipur

उच्चतर प्राथमिक अवस्था पर विषय का प्रस्तुतीकरण :-
इस स्तर के छात्र किशोरावस्था के निकट पहुँचने लगते हैं। उनकी स्मरण शक्ति, अनुभव, तर्क तथा निर्णय शक्तियों का पर्याप्त मात्रा में विकास हो जाता है।

- उद्देश्य :-

1. अर्थशास्त्र की पाठ्यवस्तु का सूचनात्मक ज्ञान प्रदान करना।

2. छात्रों को स्थानीय आर्थिक जीवन की विशेषताओं से परिचित कराना।

3. इसके ज्ञान से छात्रों को मानविय संबंधों या लगावों को समझने के लिए प्रोत्साहित करना।

4. स्थानीय, प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय आर्थिक समस्याओं का संक्षिप्त परिचय प्रदान करना।

- इस स्तर पर निम्नलिखित बातों का शिक्षण होना चाहिए :-

1. अर्थशास्त्र का अर्थ।
2. स्थानीय आर्थिक समस्याओं का व्यावहारिक ज्ञान।
3. राष्ट्रीय आर्थिक समस्याओं का सूचनात्मक ज्ञान।
4. कृषि
5. घरेलु उपयोग - धंधे।
6. सहकारी क्रियाएं
7. डाक व्यवस्था का ज्ञान।
8. मनोरंजन के साधन।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers Training College
Birsinghpur
Shahuri, Samastipur

9. आवागमन के साधनों की जानकारी।
10. श्रमिकों एवं किसानों की समस्याओं का प्रारंभिक ज्ञान।
11. आवागमन के साधनों की जानकारी।

अर्थशास्त्र का शिक्षक इसके प्रस्तुतीकरण के लिए निम्नलिखित शिक्षण पद्धति का प्रयोग कर सकता है —

1. योजना पद्धति
2. समस्या पद्धति
3. पाठ्य-पुस्तक पद्धति

शिक्षण प्रविधियां तथा सहायक सामाग्री :—

अर्थशास्त्र का शिक्षक निम्नलिखित प्रविधियों एवं साधनों का प्रयोग कर सकता है —

1. चित्र
2. मानचित्र
3. चार्ट
4. रेडियो
5. नाटक प्रविधी
6. प्रश्न प्रविधि
7. कथन प्रविधि
8. चल चित्र

अवर माध्यमिक अवस्था पर अर्थशास्त्र का प्रति पादन :—

इस स्तर पर बालक किशोरावस्था में प्रवेश करता है। उसमें विभिन्न दृष्टिकोण से पर्याप्त परिवर्तन आ जाता है। उसका मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, नैतिक शब्द ज्ञान आदि सभी का विकास होता है। इस स्तर पर बालक स्वयं क्रिया करके निर्णय पर पहुंचना चाहता है।

उद्देश्य :-

1. छात्रों को आर्थिक पदों, सिद्धान्तों, नियमों प्रवृत्तियों आदी से अवगत कराना।

2. बालकों को आर्थिक जीवन के विकास से परिचित कराना।

3. बालकों को दैनिक जीवन में अर्थशास्त्र के महत्व से परिचित कराना।

4. राष्ट्र तथा मानव समाज के प्रति निष्ठा का भाव उत्पन्न करना।

शिक्षण - पद्धतियाँ :-

अर्थशास्त्र - शिक्षण की शिक्षण पद्धतियों में से कुछ पद्धतियाँ इस स्तर के लिए बहुत उपयोगी है, जो इस प्रकार है —

1. योजना पद्धति
2. समस्या पद्धति
3. आगमन - निगमन पद्धति
4. विश्लेषण - संश्लेषण पद्धति
5. समाजीकृत अभिव्यक्ति पद्धति
6. निरिक्षण अध्ययन पद्धति
7. पाठ्य-पुस्तक पद्धति

St. Paul Teachers Training College, Bishunpur, Samastipur

शिक्षण - प्रविधियाँ एवं सहायक सामाग्री :-

इस स्तर के लिए जो प्रविधियाँ तथा साधन उपर्युक्त है जो नीचे निम्नलिखित है :-

1. प्रश्न प्रविधी ।
2. कथन प्रविधि ।
3. उदाहरण प्रविधि ।
4. निरीक्षण प्रविधी ।
5. परीक्षा प्रविधी ।
6. कार्य निर्धारण प्रविधि ।
7. अभ्यास प्रविधि ।
8. कहानी प्रविधि ।
9. नाटकीय प्रविधि ।

सहायक सामाग्री :-

1. चित्र ।
2. रेखाचित्र एवं रेखाकृतियाँ ।
3. मानचित्र ।
4. ग्राफ ।
5. चार्ट ।
6. रेडियो ।
7. चल चित्र
8. समाचार - संबंधी फिल्म ।
9. समाचार पत्र एवं अन्य पत्रीकाएँ ।
10. मॉडल

उच्चतर माध्यमिक अवस्था पर अर्थशास्त्र का प्रतिपादन :-
इस स्तर पर परंपरागत प्रणाली के अनुकुल 11वीं तथा 12वीं कक्षाएं आती है। इस स्तर के छात्रों का मानसिक स्तर परिपक्व होता है। वे प्रत्येक तथ्यों को क्यों? कब? कैसे? आदि प्रश्नों के आधार पर ग्रहण करना चाहते है। उनका मानसिक एवं सौंवेगात्मक विकास पर्याप्त मात्रा में उच्च होता है।

ST. PAUL TEACHERS' TRAINING COLLEGE
BIRSINGHPUR, SAMASTIPUR

B.Ed

Session - 2021-23

ASSIGNMENT

Name- Shubh Saurabh Kumar
Class- B.ed (II)
Roll no.- 43
Section- A
Course- 7(b) psychology

Submitted by
Shubh Saurabh Kumar

Submitted to

C-7b

Name	SHUBH SAURABH KUMAR	Year	2021-23
Subject	C-7(b) PSYCHOLOGY	Class	B.ed (II)
Semester		Roll No.	43

INDEX

Sr. No.	Experiment Description	Experiment Date (Page no)	Submission Date	Remarks / Signature
(1)	शिक्षण विधि से आप क्या समझते हैं? मनोविज्ञान शिक्षण विधि के अंतर्गत आत्म-निरीक्षण विधि तथा प्रयोगात्मक विधि के गुण-दोषों तथा उनका वर्णन करें।	1-9		
(2)	आकलन से क्या समझते हैं? मनोविज्ञान के अंतर्गत आकलन संबंधी किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है? विवेचना करें।	10-16		

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
...huri, Samastipur

C-7(b)

Page: 1

Q.1. शिक्षण विधि से आप क्या समझते हैं? मनोविज्ञान शिक्षण विधि के अंतर्गत आत्म-निरीक्षण विधि तथा प्रयोगात्मक विधि के गुण-दोषों तथा उनका वर्णन करें।

उत्तर! परिचय !-

शिक्षक द्वारा संचालित जिन क्रमबद्ध विधियों के सहारे छात्रों के ज्ञान की आपूर्ति होती है। इन क्रमबद्ध विधियों को शिक्षण विधि कहते हैं।

जब व्यक्ति किसी कार्य को करने का मन बनाता है तो सर्वप्रथम उस कार्य को सफलतापूर्वक करने के लिए उसके तरीके के बारे में चिन्तन करता है अथवा विचार करता है। चाहे काम बिना सोचे के ही शुरू कर दिया जाए तो सफलता असंभव है। ठीक इसी प्रकार शिक्षक शिक्षण कार्य करने से पूर्व यह निर्धारित करता है कि किस पाठ अथवा प्रकरण को किस विधि से पढ़ाया जाये। वैसे इसका कोई नियम निर्धारित नहीं है यह तीन बातों पर निर्भर करता है। विषय वस्तु की प्रकृति, अध्यापक की क्षमता तथा अध्यापक

विषय वस्तु पर नियंत्रण । इस प्रकार विधि के एक माध्यम है शिक्षक की विषय वस्तु के प्रस्तुतिकरण का वह भी सरल, सुगम एवं सजीव एक शिक्षण विधि एक अध्यापक के लिए उपयुक्त है यह आवश्यक नहीं है कि वह विधि दूसरे प्रकरण हेतु दूसरे अध्यापक को भी उपयोगी सिद्ध हो सकती है। प्रत्येक शिक्षक को शिक्षण विधियों का ज्ञान होना आवश्यक है।

• शिक्षण विधि का अर्थ :-

शिक्षण पद्धति शिक्षक द्वारा संचालित वह क्रिया है जिसके विद्यार्थियों को ज्ञान की प्राप्ति होती है। बालकों के मस्तिष्क, कर्म और भावनाओं के क्षेत्र में अपेक्षित परिवर्तन लाना अध्यापन का उद्देश्य होता है। मन, कर्म, हृदय की प्रवृत्तियों के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास शिक्षा से अपेक्षित है। शिक्षक किसी एक विधि का प्रयोग करके अपने उद्देश्यों में सफल नहीं हो सकता है। शिक्षक को अपने उद्देश्यों की आदि प्राप्त प्राप्त करने के लिए उचित विधि का चयन करके किसी [illegible] को अध्यापन विधियों का ज्ञान होना

जाती आवश्यक है। साथ- साथ उपागम, निष्पादन का संगठन, शिक्षक - छात्र संबंध, छात्र - छात्र संबंध, छात्र की सहभागिता, सीखने के सिद्धांत, विचार की स्वतंत्रता, शिक्षा के लक्ष्य, कारकों पर आधारित विभिन्न विधियों का निर्माण हुआ है। छात्रों की रुचि, योग्यता, आयु एवं आवश्यकता के अनुसार शिक्षण विधि का चुनाव ही सर्वश्रेष्ठ विधि कहलाती है।

- शिक्षण विधि का परिभाषा !-

शिक्षा विधि की परिभाषा विभिन्न विद्वानों के द्वारा की गई है। जिनमें से कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं।

- डीवी (Dewey) के अनुसार !-

" पद्धति वह तरीका है जिसके द्वारा हम पठन सामग्री का विश्लेषण करके निष्कर्षों की प्राप्ति करते हैं। "

- बाईनिंग (Bining) के अनुसार !-

" शिक्षण विधि शिक्षा प्रक्रिया का गतिशील पक्ष है। "

St. Paul Teachers' Training College, Birsinghpur, Samastipur

• हरबर्ट वार्ड एवं रैस्को (Herbart ward and Rosco) के अनुसार !-

"यह सत्य है कि उत्तम विधि मात्र कृत्रिम अथवा यांत्रिक प्रणालियों का योग नहीं है तथा प्रत्येक शिक्षक को स्वयं अपनी शिक्षण विधि को आविष्कृत करना चाहिए। यह स्मरणीय है कि उत्तम शिक्षण विधि कुछ निश्चित एवं व्यापक सिद्धांतों के अनवरत निरीक्षण के परिणाम स्वरूप हो जाने से सकती है। इसके अंतर्गत शिक्षण की व्यवस्थित प्रणाली एवं विषय - वस्तु की क्रमबद्धता को समावेश होता है जिसके परिणामस्वरूप समय एवं शक्ति की बचत होती है। इसके द्वारा विषय - वस्तु की महत्ता के अनुसार वर्गीकरण करना संभव हो सकेगा और इसके द्वारा छात्रों का अधिकतम सहयोग होगा तथा इनकी अध्ययन कार्य में सक्रिय रुचि बनी रहेगी।"

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Samastipur

• डा० सरोज सक्सेना (Dr Saroj Saxena) के अनुसार !-

"वास्तव में शिक्षण विधि

शिक्षण सामग्री को छात्रों तक पहुँचाने का एक माध्यम या उद्देश्य है जो उद्देश्य प्राप्ति में भी अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करती है।"

• आत्म निरीक्षण विधि :-

आत्म निरीक्षण या अन्तर्दर्शन का शाब्दिक अर्थ है अपने में देखना अथवा आत्मनिरीक्षण। इस प्रकार अन्तर्निरीक्षण में व्यक्ति स्वयं अपने व्यवहार का निरीक्षण करता है। इसलिए इसे अन्तर्निरीक्षण विधि अथवा आत्म-निरीक्षण विधि कहा जाता है। डेविस के शिक्षा-शब्दकोष में अन्तर्निरीक्षण के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है, अन्तर्निरीक्षण व्यक्ति के अपने स्वयं के विचारों, प्रेरकों, मनोभावों एवं विश्लेषणों के अध्ययन का कार्य है।

• आत्म निरीक्षण विधि के गुण :-

आत्मनिरीक्षण विधि के गुण निम्नलिखित है—

→ इस विधि के प्रयोग से व्यक्ति को अपने व्यवहार के विषय में प्रत्यक्ष तात्कालिक एवं वास्तविक ज्ञान प्राप्त होता है।

Principal
St. Paul Teachers' Training College
Bishanpur, Mahuli, Samastipur

→ इस विधि में व्यक्ति अपने व्यवहार का यथार्थ अवलोकन करता है, जिसके अवलोकन में अन्य व्यक्ति सफल नहीं हो सकते हैं।

→ यह विधि अन्य विधियों के उपयोग में सहायक है जैसा कि "डगलस एवं हॉलैण्ड" ने लिखा है - "यह विधि अन्य विधियों द्वारा प्राप्त किए गए तथ्यों, नियमों और सिद्धांतों की व्याख्या करने में सहायता देती है।"

→ यह विधि अत्यन्त मितव्ययी है क्योंकि इसके प्रयोग में किसी सामग्री अथवा यन्त्र की आवश्यकता नहीं होती है। इस सन्दर्भ में "रॉस" ने लिखा है, "यह विधि खर्चीली नहीं है क्योंकि इसमें किसी विशेष यंत्र अथवा सामग्री की आवश्यकता नहीं पड़ती है।"

• आत्मनिरीक्षण विधि के दोष :-

आत्मनिरीक्षण विधि के दोष निम्नलिखित हैं :-

(i) वैज्ञानिकता के अभाव में यह विधि मान्य नहीं है क्योंकि इस विधि के द्वारा प्राप्त परिणामों का किसी अन्य व्यक्ति द्वारा परीक्षण किया जाना संभव नहीं है।

St. Paul Teachers Training College

(ii) अन्तर्निरीक्षण विधि में व्यक्ति अपने स्वयं के व्यवहार का अवलोकन करता है, किन्तु मानसिक प्रक्रिया के अन्तर्गत व्यक्ति के द्वारा अपने व्यवहार का अवलोकन करना यदि संभव नहीं हो तो कठिन अवश्य है।

(iii) अन्तर्निरीक्षण विधि से प्राप्त होने वाली सूचनाएँ अवैज्ञानिक आत्मनिष्ठ होती है।

• प्रयोगात्मक विधि :-

प्रयोगात्मक पद्धति सामाजिक अनुसंधान की वह पद्धति है जो प्रयोग के आधार पर की जाती है। समाजशास्त्रीय अनुसंधान में परीक्षणात्मक या प्रयोगात्मक अनुसंधान अभिकल्प प्रणाली एक विकसित एवं उन्नत विधि है, जिसके अंतर्गत हम सूक्ष्म समस्या का सूक्ष्म समाधान प्रस्तुत कर सकते है। प्रयोगात्मक अनुसंधान पद्धति उपयोगिता की दृष्टि से अत्यन्त व्यावहारिक है क्योंकि इसके भी प्राकृतिक विज्ञानों की तरह ही यथार्थ निश्चित परिणाम प्राप्त करने के लिए सामाजिक घटनाओं का अध्ययन नियंत्रित परिस्थिति में किया जाता है।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

• प्रयोगात्मक विधि के गुण !-

प्रयोगात्मक विधि के गुण निम्नलिखित है !-

(i) समय की बचत !-

सामाजिक अनुसंधान एक लम्बी प्रक्रिया है जिसमें अत्यंत ही अधिक समय लगता है। किन्तु सामाजिक अनुसंधान में जब प्रयोगात्मक पद्धति का प्रयोग किया जाता है, तो इससे समय की बचत होती है।

(ii) अधिक प्रमाणिकता !-

सामाजिक अनुसंधान से प्राप्त तथ्यों की प्रमाणिकता सबसे बड़ी आवश्यक होती है। अन्य विधियों से प्रमाणिकता की गारंटी संभव नहीं है। कारण यह है कि अन्य विधियों के द्वारा किए जाने वाले अध्ययनों पर शोधकर्ता की भूमिका केवल दर्शक होती है।

• प्रयोगात्मक विधि के दोष !-

प्रयोगात्मक विधि के दोष निम्नलिखित है !-

(i) प्रयोगात्मक पद्धति में घटकों चरों पर नियंत्रण किया जाता है।

PRINCIPAL
St Paul Teachers' Training College
Birsa Nagar
Jhahuri, Sahebganj

घटनाओं में नियंत्रण के कारण शोध निष्कर्ष वास्तविक से दूर होते हैं।

(ii) प्रयोगात्मक विधि का सबसे बड़ा दोष यह है कि सभी सामाजिक घटनाओं पर इसे प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

(iii) प्रयोगात्मक विधि अनुसंधानकर्ता चरों को घटा-बढ़ाकर अपने हिसाब से प्रयोग करता है। चरों को इधर-उधर करने से भी शोध निष्कर्ष में वैधता का अभाव होता है।

• निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि शिक्षण विधि के बिना शिक्षण की प्रक्रिया अधूरी मानी जाती है। यह कहा जा सकता है कि शिक्षण विधि के द्वारा शिक्षक कठिन से कठिन प्रसंगों को भी सरल-सरल से बोधगम्य बना सकता है। अतः शिक्षक के लिए शिक्षण विधियों की जानकारी होना अति आवश्यक है।

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Bahuri, Samastipur

S T. PAUL TEACHERS' TRAINING COLLEGE
BIRSINGHPUR, SAMASTIPUR

(Under Aegis of Parmeshwar Neeta Educational Trust)
Recognized by NCTE, Bhubaneswar
Affiliated to L.N.Mithila University, Darbhanga

B.Ed. (Bachelor of Education)
Session - 2021-23 (2nd year)

ASSIGNMENT

1. Name of the Students :-PRIYANKA KUMARI
2. College Roll No. :-89
3. Section :-B
4. University Roll No. :- 2241318
5. Subject :-C-7b (Pedagogy of Pol. Science)

11-10-2022
Date of Submitted

Priyanka Kumari
Students Signature

Teachers Signature

Political Science

1. राजनीतिक विज्ञान शिक्षण की विधियाँ कौन - कौन सी है? आप किन विधि को श्रेष्ठ मानते है, और क्यों? व्याख्या करें।

उत्तर :-> Introduction :->

पाठ्य सामग्री का लक्ष्य शिक्षण विधि से हटकर शिक्षा की समझ, विषयों की समझ, बच्चों के सीखने के तरीके की समझ, समाज व शिक्षा का संबंध जैसे पहलुओं पर केन्द्रित है। पाठ्यक्रम में शिक्षण के तरीकों पर जोर देने के स्थान पर विषय की समझ को महत्व दिया गया है।

राजनीतिक विज्ञान शिक्षण की विधियाँ निम्नलिखित है :->

(i) पाठ्य - पुस्तक विधि (Text - Book Method)

(ii) व्याख्यान विधि अथवा भाषण विधि (Lecture Method)

(iii) समस्या समाधान विधि (Problem solving Method)

(iv) कहानी विधि (Story Telling Method)

(v) आगमन - निगमन विधि (Inductive - Deductive Method)

(vi) वाद - विवाद पद्धति (Discuss Method)

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur
Jhahuri, Samastipur

(vii) संश्लेषणात्मक विधि (Synthetic Method)

(viii) निरीक्षण विधि (Observational Method)

(ix) प्रश्नोत्तर विधि (Question - Answer Method)

शिक्षण नीतियाँ तथा शिक्षण विधियाँ दोनों के अपने विशिष्ट क्षेत्र तथा अर्थ है भ्रमवश बहुत से लोग इन्हें एक-दूसरे के पर्याय शब्द मान लेते हैं। शिक्षण विधि में 'पाठ्य-वस्तु' महत्त्वपूर्ण होती है। जैसी पाठ्य-वस्तु की प्रकृति होती है उसी प्रकार शिक्षण विधि का चयन किया जाता है। दूसरे शब्दों में पाठ्य-वस्तु के प्रस्तुतीकरण की शैली को शिक्षण विधि कहा जाता है। (It is a style of the Presentation of Content in Classroom).

विधि : अंग्रेजी भाषा के Method शब्द का पर्याय है। Method शब्द लैटिन (Latin) भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ है Mode या Way रास्ता या अथवा माध्यम। प्रो. एन. वैद्य (N. Vaidya) ने विधियों का सीमांकन करते हुए इस लिखा है —

"Here, it means methods of delivering knowledge and transmiting of scientific (teaching) skills by a teacher to his Pupils and their Comprehension and application

PRINCIPAL St. Paul Teachers' Training College Bishrampur Jharkhand

by them in the Process of Studying and learning.

एक शिक्षक के लिए आवश्यक है कि उसे शिक्षण विधियों का ज्ञान हो ताकि वह आवश्यकता और परिस्थितियों के अनुसार किसी भी उपर्युक्त विधि का प्रयोग कर अपने शिक्षण कार्य को सुचारु रूप से चला सके। शिक्षण विधियाँ शिक्षक का मार्ग-दर्शन करती है कि वह अपने छात्रों को किस प्रकार से शिक्षा प्रदान करें। यह सत्य है कि जिस प्रकार से सही रास्ते के अभाव में एक व्यक्ति अपने निर्दिष्ट स्थान पर नहीं पहुँच सकता, उसी प्रकार बिना उचित विधि के उपयोग के छात्रों को सही ज्ञान नहीं दिया जा सकता।

"Method is simply the means of blending the Component Of living subject matter, enquiring attitudes and lively intersts in such a way that it makes for Creative teaching and does not allow the dull Job of getting a degree to become an end in itself."

शिक्षक कक्षा में शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने के लिए अध्यापन में विभिन्न प्रकार की विधियों का प्रयोग करता है। ये विधियाँ निम्नलिखित है :-

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur, Shahuri, Samastipur

(i) **संवाद विधि (Dialogue Method)** :-

वास्तव में संवाद का सामान्य अर्थ है वार्तालाप, बातचीत लेकिन संवाद तो दो या अधिक व्यक्तियों के बीच होता है, किन्तु संख्या सीमित ही रहती है तथा वे किसी विषय पर वार्तालाप करते हैं, लेकिन संवाद में अभिनय का पुट अधिक रहता है।

(ii) **सहगामी विधि** :->

सहगामी विधि का सामान्य अर्थ शिक्षक एवं विद्यार्थी की सहभागिता से लिया जाता है। शिक्षाशास्त्रियों का तर्क है कि शिक्षक एवं छात्र दोनों ही शिक्षण प्रक्रिया के महत्त्वपूर्ण बिन्दु हैं जितना की शिक्षक। इसे एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। एक शिक्षक कक्षा में शिक्षण कार्य कर रहा है अर्थात् वह कक्षा में पूर्ण तल्लीनता से शिक्षण कार्य कर रहा है। वह छात्रों से प्रश्न पूछकर, श्यामपट्ट पर लेखन करवाकर एवं पृष्ठ पोषण प्रदान करके उनका सहयोग प्राप्त कर रहा है। इस प्रकार दोनों पक्ष शिक्षण प्रक्रिया में एक-दूसरे को सहयोग दे रहे हैं।

प्रो० श्रीकृष्ण दुबे के शब्दों में, "सहगामी विधि का आशय उस शिक्षण प्रक्रिया से है जिसमें शिक्षक एवं शिक्षार्थी की पूर्ण सहभागिता निश्चित होती है तथा सहभागिता द्वारा ही शिक्षण प्रक्रिया प्रभावशाली एवं उद्देश्य पूर्ण बनती है।"

(iii) **योजना विधि (Project Method)** :->

योजना विधि के अर्थ को समझने के लिए मरसेल ने लिखा है, शिक्षण की

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur, Samastipur

निगमन या आगमन विधि के समान योजना विधि के सार रूप में न तो कभी शिक्षण की पद्धति थी और न है। इसकी मूल धारणा यह है कि सीखने वाले का सक्रिय उद्देश्य अति महत्त्वपूर्ण होता है। सीखने वाले को स्वयं कार्य करना चाहिए, अन्यथा वह अच्छी प्रकार से नहीं सीख पायेगा।

(iv) आगमन - निगमन विधि :→

आगमन :- आगमन विधि का अर्थ बताते हुए जोजेफ लैंडन ने लिखा है - "जब कभी हम बालकों के समक्ष समान बहुत से तथ्य, उदाहरण या वस्तुएँ प्रस्तुत करते हैं और फिर उनसे स्वयं निष्कर्ष निकलवाने का प्रयास करते हैं, तब हम शिक्षण की आगमन विधि का प्रयोग करते हैं।"

निगमन :→ निगमन विधि का अर्थ स्पष्ट करते हुए जोजेफ लैंडन ने लिखा है - "निगमन विधि द्वारा शिक्षण में पहले परिभाषा या नियम सिखाया जाता है, फिर उसके अर्थ की व्याख्या की जाती है और अन्त में तथ्यों का प्रयोग करके उसे स्पष्ट किया जाता है।"

(v) संश्लेषणात्मक विधि (Synthetic Method) :→

'संश्लेषणात्मक' (Synthetic) शब्द - संश्लेषण से बना है। 'संश्लेषण' का अर्थ है - मिलाना या जोड़ना। 'संश्लेषण' की प्रक्रिया - 'विश्लेषण' की प्रक्रिया के विपरीत है। इसमें जिस विषय, तथ्य, घटना, समस्या आदि को खण्डों या अंशों में विभाजित किया गया, उन्हें फिर एक दूसरे से सम्बन्धित करके, उसको पूर्ण रूप में उपस्थित किया जाता है।

classmate
Date :
Page :

(vi) निरीक्षण विधि (Observational Method) :-

"निरीक्षण विधि" का सर्वमान्य अर्थ यह है कि बालक स्वयं किसी वस्तु तथ्य या घटना का अवलोकन करके, उसका ज्ञान प्राप्त करे। जिस वस्तु का वह ज्ञान प्राप्त करना चाहता है, उस पर वह अपने ध्यान को केन्द्रित करके, उसके विषय में सभी सम्भव बातों को जानने का प्रयास करता है।
इस प्रसंग में गार्थिक ने लिखा है - "किसी वस्तु का निरीक्षण करते समय उसके विभिन्न भागों, उनके कार्यों एवं रचना और उनके पारस्परिक सम्बन्ध का अध्ययन किया जाना आवश्यक है। निरीक्षण हर प्रकार से पूर्ण होना चाहिए और उसमें किसी भी अनावश्यक बात को स्थान नहीं दिया जाना चाहिए।

(vii) प्रश्नोत्तर विधि (Question-Answer Method) :->

प्रश्नोत्तर विधि शिक्षण की एक प्रजातान्त्रिक विधि है जिसमें शिक्षक तथा छात्र दोनों ही सक्रिय रहते हैं। शिक्षक चिन्तनपूर्वक रचित प्रश्न पूछते हैं तथा छात्र उनका उत्तर देते हैं। छात्र अपने शिक्षक के द्वारा पूछे प्रश्नों का उत्तर देते-देते ही ज्ञान प्राप्त करते हैं।
शिक्षक इस विधि के अन्तर्गत कक्षा में विषय-वस्तु से सम्बन्धित प्रश्न पूछते हैं और छात्र उन प्रश्नों का उत्तर देते हैं। सम्पूर्ण पाठ का विकास इसी क्रम में चलता रहता है। शिक्षक प्रारम्भ में छात्रों से उनके पूर्वज्ञान पर आधारित प्रश्न पूछता है।

End

PRINCIPAL
St. Paul Teachers' Training College
Birsinghpur, Shahuri, Samastipur